SEM-IV समाजशास्त्र

(MIC)

Date - 15/10/25

Topic :- गाँधी जी का समाजवाद

महात्मा गांधी ने समाज और आर्थिक व्यवस्था के निर्माण में नैतिकता, अहिंसा और समानता को विशेष महत्व दिया। उनका समाजवाद पश्चिमी औद्योगिक समाजवाद से भिन्न था। गांधी के अनुसार, समाज का विकास, हिंसा, वर्ग-संघर्ष और भौतिकवादी मूल्यों पर नहीं बल्कि सत्य, अहिंसा, सहयोग और आत्मनिर्भरता पर आधारित होना चाहिए।

→ गाँधी जी के समाजवाद की प्रमुख विशेषताएँ :-

→ 1. नैतिकता पर आधारित समाजवाद —

गांधी जी का समाजवाद नैतिकता, आत्मसंयम और धर्म के सिद्धांतों पर आधारित है। उनका मानना था कि केवल आर्थिक संसाधनों का समान वितरण ही पर्याप्त नहीं, बल्कि व्यक्ति को नैतिक रूप से भी विकसित होना चाहिए।

→ 2. वर्गहीन समाज की परिकल्पना →

गांधी जी ने दो वर्गों - समाज को पूँजीपति और मजदूर - में बांटने के बजाए एक ऐसे समाज की कल्पना की, जहाँ सभी लोग परस्पर सहयोग और सेवा की भावना से काम करें।

→ 3. संपत्ति का न्यास सिद्धांत — (Trusteeship Theory)

गांधी जी का मानना था कि संपन्न व्यक्ति अपनी संपत्ति का उपयोग व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए नहीं बल्कि समाज की भलाई के लिए करें। उन्होंने पूँजीपतियों को समाज का न्यासधारी बताया।

→ 4. आर्थिक समानता →

गांधीजी आर्थिक विषमता को समाज में हिंसा और संघर्ष का मुख्य कारण मानते थे। वे चाहते थे कि हर व्यक्ति को जीवन की आवश्यक वस्तुएँ समान रूप से उपलब्ध हों और अत्यधिक धन का केंद्रीकरण समाप्त हो।

→ 5. ग्राम स्वराज की अवधारणा :-

उनके अनुसार गाँव स्वावलंबी इकाई है। गांधी जी के अनुसार वास्तविक स्वतंत्रता तभी संभव है, जब प्रत्येक गांव आर्थिक, सामाजिक और

Ajanta Products Officer

Scanned with CamScanner